भारत की एकता और अखंडता विश्व के लिए रोल मॉडल है।

33 साल की उम्र में सफल क्रांति कर यमन को पुर्नजीवित किया। शांति के लिए नोबल पुरस्कार से नवाजा गया। विश्व के कई बड़े पुरस्कार उनके कार्यालय की शोभा बढ़ा रहे हैं। इसके बाद क्या? क्या वह यमन का नेतृत्व करना चाहेंगी? तवाकुल ने बड़े सादगी से कहा कि यमन के इतिहास में दो रानियों के जबरदस्त योगदान का जिक्र है, एक थी रानी बिल्कीस और दूसरी अर्वा। यमन की जनता मुझे इन्हीं रूपों मे देखती है। यमन की जनता तो मुझे इस बार ही सत्ता सौंपने को तैयार थी। पूरा यमन चाहता है कि मैं सरकार का हिस्सा बनूं, लेकिन मेरी अपनी व्यक्तिगत राय यह है कि मुझे सरकार के बाहर रहकर ही काम करना है। मेरी लड़ाई यमन तक ही सीमित नहीं है। यमन अब इस वैश्विक गांव का छोटा सा कस्बा है। अब मैं विश्व की नागरिक हूं, पृथ्वी मेरी मातृभूमि है और मानवता मेरा राष्ट्र है।

क्यों बढ़ रहा है जल-संकट ?

यह समस्याएं मौसम बदलाव से जुड़ी हुई हैं। फिर बिना बिजली के उसे ऊपर खींचना मुश्किल है। पूर्व से आसन्न बिजली का संकट साल दर साल बढ़ते जा रहा है। बिजली कटौती के कारण किसान फसलों में पानी नहीं दे पा रहे हैं। अगर गेहूं की फसल में अंतिम पानी नहीं मिला तो फसल का कम उत्पादन होता है। यह अलहदा बात है कि कमजोर और छोटे किसान भारी पूंजी लगाकर सिंचाई की इस सुविधा से वंचित हैं।

कुछ समय पहले तक हर गांव में तालाब हुआ करते थे। कुएं, बाबड़ी, नदी-नालों में बहुतायत पानी था। वर्षा जल को छोटे-छोटे बंधानों में एकत्र किया जाता था। जिससे सिंचाई, घरेलू निस्तार और मवेशियों को पानी मिल जाता था। किसान पहले बैलों से चलने वाली मोट से खेतों की सिंचाई करते थे। लेकिन अब तालाबों पर कब्जा हो गया है। कुएं और बाबड़ी जैसे परंपरागत पानी के स्त्रोत खत्म हो गए हैं।

आजादी के ठीक बाद पहली पंचवर्षीय योजना के तहत इस जिले में भी एक छोटा डोकरीखेड़ा बांध बनाया गया था। यद्यपि मछवासा नदी को इससे जोड़ दिया गया है लेकिन फिर भी यह बांध अपनी क्षमता के अनुसार पूरा नहीं भर पाता। उसमें गाद भर गई है, पुराव हो गया है। अब इससे केवल किसानों को मुश्किल से रबी की फसल के लिए दो पानी ही मिल पाते हैं। वह भी बारिश हुई तो, अन्यथा नहीं।

इसके बाद 1975 में तवा बांध बना। इससे तवा कमांड में नहरों से सिंचाई से फायदा तो हुआ। एक समय मिट्टी बचाओ आंदोलन से जुड़ी रही ग्राम सेवा समिति के एक अध्ययन के अनुसार यहां की काली मिट्टी वाली जमीन जो काफी उपजाऊ थी, वो दलदल में तब्दील होती जा रही है। या उन जमीनों में लवणीयता और क्षारीयता बढ़ती जा रही है। नए-नए खरपतवारों को आगमन हुआ है जिससे कृषि में लागत में और वृद्धि हुई तथा उत्पादन भी प्रभावित होने लगा।

नहरों के अलावा, बड़ी संख्या में नलकूप खोदे गए हैं। जिला सांख्यिकी कार्यालय की वर्ष 2008 के अनुसार वर्ष 2003-04 में 3931, वर्ष 2004-05 में 3943, वर्ष 2005-06 में 3972 वर्ष 2006-07 में 4853 और वर्ष 2007-08 में 4894 नलकूपों का खनन हुआ। यह सिलसिला जारी है। विज्ञान और पर्यावरण केन्द्र व गांधी शांति प्रतिष्ठान की एक रपट बताती है कि देश की भूमिगत जल संपदा प्रति वर्ष होने वाली वर्षा से दस गुना ज्यादा है लेकिन सन् 70 से हर वर्ष करीब एक लाख 70 हजार ट्यूबवेल लगते जाने से कई इलाकों में जलस्तर घटता जा रहा है। ठीक इस जिले में भी यही हो रहा है।

कुछ समय पहले तक गांव में कच्चे घर होते थे। घर के आगे पीछे काफी जगह होती थी। खेती-किसानी के काम में घरों में ज्यादा जगह लगती है। घर के आगे आंगन और घर के पीछे बाड़ी होती थी। बाड़ी में हरी सब्जियां लगाई जाती थीं। पेड़-पौधे लगे होते थे। इस सबसे बारिष का पानी नीचे जज्ब होता था और धरती का पेट भरता था। यानी भूजल ऊपर आता था। आज गांव में भी पक्के मकान बन गए हैं। घरों के पीछे बाड़ी भी नहीं है।

इसलिए बारिश का पानी बेकार बह जाता है। इस कारण न तो उसे हम निस्तार के उपयोग में ला पा रहे हैं और न वह पानी धरती में समा रहा है। यानी हम धरती से पानी ले तो रहे हैं, लेकिन उसे दे नहीं रहे हैं। इस कारण भूजल का पुनर्भरण नहीं हो रहा है। नतीजतन, टाइम बम की तरह हर साल भूजल नीचे चला जा रहा है।

पानी का एकमात्र स्त्रोत है वर्षा। जिला गजेटियर 1979 के अनुसार जिले की सामान्यवर्षा 1294.5 मि. मी. है, पर जो वर्षा होती है उसकी अवधि सीमित है। मानसून के 3-4 माह। जिसका करीब आधा प्रतिशत पानी वाष्पीकृत होकर उड़ जाता है। और बाकी बचे आधे पानी में से खेतों की सिंचाई, भूजल का पुनर्भरण और नदी-नालों का पेट भरता है। अब हमें इसी पानी को सहेजना होगा। खेत का पानी खेत में और गांव का पानी गांव में रोकना होगा। बारिश का पानी तालाब या छोटे बंधानों के माध्यम से गांव में ही रोका जा सकता है।

यह कैसा होगा? यह सरल तरीका है। जैसे भी हो, जहां भी संभव हो, बारिष के पानी को वहीं रोककर कमजोर वर्ग के लोगों के खेत तक पहुंचाना चाहिए। जहां पानी गिरता है, उसे सरपट न बह जाने दें। स्पीड ब्रेकर जैसी पार बांधकर, उसकी चाल को कम करके धीमी गति से जाने दें। इसके कुछ तरीके हो सकते हैं। खेत का पानी खेत में रहे इसके लिए मेढबंदी की जा सकती है। गांव का पानी गांव में रहे इसके लिए तालाब और छोटे बंधान बनाए जा सकते हैं। चैक डेम बनाए जा सकते हैं। या जो टूट-फूट गए हैं उनकी मरम्मत की जा सकती है। वृक्षारोपण किया जा सकता है।

शहरों में वाटर हारवेस्टिंग के माध्यम से पानी को एकत्र कर भूजल को ऊपर लाया जा सकता है। इसके माध्यम से कुओं व नलकूप को पुनजीर्वित किया जा सकता है। नदी-नालों में बोरी बंधान बनाए जा सकते हैं। सूखी नदियों को गहरा किया जा सकता है।

इसके साथ सबसे जरूरी है खेती में हमें फसल चक्र बदलना होगा। कम पानी या बिना सींच के परंपरागत देषी बीजों की खेती करनी होगी। और ऐसी कई देशी बीजों को लोग भूले नहीं है, वे कुछ समय पहले तक इन्हीं बीजों से खेती कर रहे थे। देशी बीज और हल-बैल, गोबर खाद की ओर मुड़कर मिट्टी-पानी का संरक्षण करना होगा। यानी समन्वित प्रयास से ही हम पानी जैसे बहुमूल्य संसाधन का संरक्षण व संवर्धन कर सकते हैं। इस संदर्भ में हमें महात्मा गांधी की सीख याद रखनी चाहिए, उन्होंने कहा था कि प्रकृति मनुष्य की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकती है, परंतु लालच की नहीं।

(यह रिपोर्ट इंक्लूसिव मीडिया फैलोशिप के अध्ययन का हिस्सा है)

अब भी हैं बोस्नियाई जंग के जख्म

यह तो सिर्फ राजधानी सारायेवो की कहानी है, बोस्निया में शहर और भी हैं। कहानियां और भी हैं। दर्द और भी हैं। 1990 के दशक में जब दुनिया भर के कम्युनिस्ट देश हिले, तो यूगोस्लाविया भी टूटा। तभी सर्बियाई सैनिकों ने बोस्नियाई हिस्से पर हमला कर दिया। बोस्निया के अंदर भी सर्बियाई बहुसंख्यक इलाका सर्पस्का रिपब्लिक है, जिसे सर्बियाई सेना का साथ हासिल था। उन्होंने भी बोस्नियाई लोगों पर कहर बरपाया। कहने को संयुक्त राष्ट्र की सेना भी इस इलाके में तैनात हुई। लेकिन उसका ज्यादा असर नहीं देखा गया। एकतरफा कार्रवाई होती रही। लोग मरते रहे। बोस्नियाई संगीत में खून मिलता रहा।

लाइब्रेरी और यूसुफ

सारायेवो की लाइब्रेरी पर सर्बियाई गोले गिरे थे। यह जमींदोज हो गई। दोबारा तैयार हो रही है। 16 साल हो गए। अब तक नहीं बनी है। राजनीति शास्त्र पढ़ रहे दामीर फिलिपोविच कहते हैं, लाइब्रेरी कमाई की जगह नहीं होती। पूंजीवादी लोग अब सिर्फ वहीं पैसे लगाते हैं, जहां से कमाई हो सके। पास में 60 साल की जाहिदा अदेमोविच की आंखों से चुपचाप आंसू ढलक पड़ते हैं। वह अपना दर्द बताने से हिचकिचाती हैं। बहुत कुरेदने पर जज्बात उबल पड़ता है, लाइब्रेरी तो फिर पुरानी शक्ल में लौट आएगा, मेरा बेटा यूसुफ कैसे आएगा। ***(डॉयचे वैले)***

6 April, 2012, Daily Chhattisgarh, Raipur